HOME WORK

1. सच्चा मित्र में क्या क्या गुण होने चाहिए ? उदाहरण सहित उत्तर लिखिए।

उ- सच्चा मित्र वही होता है जो जीवन के हर मोड़ पर आपके साथ खड़ा हो। जीवन के हर मुश्किल परिस्थिति में आपका संग खड़ा हो और आपको सबसे बेहतर समझे वह सच्चा मित्र कहलाता है जीवन में हर सुख-दुख में आपके साथ हो और अपने मित्र की हर परेशानी में हाजिर हो जाए वह होता सच्चा मित्र। सच्चा मित्र कभी भी स्वार्थी नहीं होता है, वह अपने मित्र के लिए अपनी सारी ~~दुनियां का~~ खुशियों का त्याग कर सकता है। सच्चा मित्र हमेशा अपने मित्र का आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। एक सच्चा मित्र निश्वार्थ होकर दूसरा की सहायता करता है। सच्चा मित्र एक दवाई की भाँति होते है जो अपने दोस्तों के तकलीफों को दूर कर देता है। सच्चा मित्र मार्गदर्शक होता है। सच्चा मित्र अपने दोस्त को जीवन के विषम परिस्थितियों में

कभी मिटने नहीं देता है।

* उदाहरण :- रामायण में श्रीराम ने जैसे सुग्रीव की सहायता की उसी प्रकार सुग्रीव ने भी आखिर वक्त तक प्रभु श्रीराम का साथ दिया।
* श्रीकृष्ण और सुदामा की दोस्ती। श्रीकृष्ण संपन्न राजा थे और सुदामा एक साधारण ब्राह्मण जो भिक्षा करके अपने दैनिक जीवन का गुजारा करते थे। श्रीकृष्ण ने कभी भी इन चीजों को महत्व नहीं दिया क्योंकि वह सुदामा से बेहद प्यार करते थे।

Q.2. कर्ण का मित्र प्रेम पाठ का सारांश

उ इस कविता में कवि ने संसार की सभी उपलब्धियों को मित्र - धर्म के पालन की तुलना में नगण्य बताया है। महाभारत में कर्ण की बहादुरी एवं शौर्य के कारण श्रीकृष्ण स्वयं आकर कर्ण से कहने लगे कि तुम पांडवों के भाई हो तुम उन्हीं की ओर से युद्ध करो। यह न्याय संगत है; परंतु श्रीकृष्ण की बातों से कर्ण जरा-सा भी विचलित नहीं हुआ एवं श्रीकृष्ण की बातों को सुनने के बाद बोला कि मैं तो विवशतापूर्ण जीवन जीवन व्यतीत करने के लिए विवश था। तभी दुर्योधन ने ही मेरा हाथ थामा और एक राजा की तरह मुझे सम्मान दिया। सूर्य और चंद्रमा भी इस बात का प्रमाण है। दुर्योधन के प्रति अपनी कृतज्ञता को व्यतीत करते हुए कर्ण

ने कहा कि मेरा रोम रोम दुर्योधन का ऋणी है। मैं स्वयं छोड़ सकता हूं, परंतु दुर्योधन को नहीं। जिसने मुझे सहारा दिया है, मेरी सुरक्षा की है अपने प्राण देकर मैं उसे बचाऊंगा। मित्रता एक ऐसा रत्न है जिसका मूल्य आंका नहीं जा सकता। कर्ण ने मित्रता को महत्व देते हुए श्रीकृष्ण से कहा कि जमीन की बात तो छोड़ दीजिए, यदि स्वर्गलोक भी मुझे मिल जाए तो उसे भी मैं दुर्योधन के चरणों में समर्पित कर दूंगा। इस पाठ में कवि ने कर्ण के मित्र के प्रति अटल प्रेम को व्यक्त किया है।

2. कर्ण स्वर्ग का सुख किसलिए और क्यों त्याग किया?

उ - कर्ण स्वर्ग का सुख दुर्योधन के लिए त्याग किया क्योंकि जब कर्ण मिट्टी में पड़ा हुआ था, उसका कोई अस्तित्व नहीं था और विवशतापूर्ण जीवन जीने में मजबूर था तभी दुर्योधन ने मेरा लालन-पालन किया और एक राजा की तरह मुझे सम्मान दिया। इसलिए कर्ण का रोम रोम दुर्योधन के लिए ऋणी है। इसलिए कर्ण स्वर्ग का सुख त्याग किया।

अनुच्छेद

४. मेरा प्रिय पुस्तक

उ- पुस्तक व्यक्ति का मार्गदर्शक करती है और वह मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र भी होती है मुझे पुस्तक पढ़ना बहुत पसंद है और मैंने अभी तक बहुत सारी पुस्तकें पढ़ी है जिनमें से मेरी प्रिय पुस्तक रामचरितमानस है जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास है। यह पुस्तक प्रभु श्रीराम जी के चरित्र को दर्शाती है जिन्होंने अपने पिता के वचन का मान रखने के लिए अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ घर को त्याग दिया था, उन्होंने बहुत सी मुश्किलों का सामान किया पर कभी भी हिम्मत नहीं हारी और न ही प्रयास करना छोड़ा जब सीता का अपहरण हुआ तब वह सबकी मदद करते चले गए और सब ने सीता को ढूंढने में श्रीराम की सहायता की थी।

यह पुस्तक हमें हमारे जीवन के आदर्शों के बारे में सिखाती है, इसे पढ़ने के बाद व्यक्ति में प्रेम, त्याग, विवेक और सहनशीलता की भावना का विकास होता है। यह हमें सिखाती है कि अच्छा या बुरा व्यक्ति बनना हमारे स्वयं के हाथ में हैं, विभीषण। रामचरित मानस को पढ़ने से व्यक्ति को ज्ञात होता है कि यदि हम दूसरों की मदद करते तो हमारी मदद प्रभु करते हैं। यह हमें बताती है कि बुराई पर अच्छाई की ही विजयी होती है। यह हमें एक उच्च चरित्र वाला व्यक्ति बनने में मदद करती है।